3

आधुनिक विश्व – I

14 वीं सदी के बाद से यूरोप की सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन में कई गंभीर परिवर्तन आए। इन परिवर्तनों से आधुनिक काल में प्रवेश करने में मदद मिली। यह पुनर्जागरण था, इसने सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रें में चिंतन और तर्क करने को बढ़ावा दिया तथा जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया। अरब देशों में तर्क और वैज्ञानिक जांच की अवधि पहले ही शुरू हो चुकी थी। यूरोप के पुनर्जागरण के दौरान हुए परिवर्तनों ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। परिवर्तन सामंती प्रणाली के विघटन के साथ शुरू हुए, आपने पिछले पाठ में विस्तार से पढ़ा होगा। इस पाठ में हम इन में से कुछ परिवर्तनों और घटनाक्रमों पर चर्चा करेंगे जिन्होंने मध्ययुगीन समाज को आधुनिक विश्व में परिवर्तित किया हम आधुनिक विश्व में 20 वीं शताब्दी तक घटित होने वाली घटनाओं का पता भी लगाएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप सक्षम हो जायेंगे :

- सामंतवाद के पतन के प्रभाव के बारे में जानेंगे;
- पुर्नजागरण का अर्थ, और इसकी विशेषताओं की व्याख्या;
- सुधार और इसके प्रभाव के कारण की व्याख्या;
- विज्ञान के विकास का उल्लेख करना;
- इस काल की मुख्य वैज्ञानिक खोजों कुछ मुख्य समुद्री यात्राओं की व्याख्या करेंगे;
- यूरोप और शेष विश्व में औद्योगिक क्रांति का उल्लेख करेंगे;
- अमेरिकी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति के कारणों और प्रभावों की व्याख्या करेंगे;
- जर्मनी और इटली में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए संघर्ष पर चर्चा करेंगे;
- समाजवादी विचारों और रूसी क्रांति के विकास की जांच करेंगे।

3.1 सामंतवाद के पतन के प्रभाव

मध्यकालीन युग के दौरान, सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक सामंतवाद था, आपने इसके बारे में पिछले पाठ में विस्तार से पढ़ा है। सामंतवाद एक संस्था के रूप में कई शताब्दियों तक फलता-फूलता रहा लेकिन मध्यम वर्ग के उदय के साथ ही इसका पतन शुरू हो गया था। शक्तिशाली राज्यों के उदय तथा समाजवादी स्वामियों में आपस में युद्ध होने से इसका पतन हुआ। नए नगरों और शहरों के उदय होने तथा व्यापार के पुनरूद्धार से सामंतवाद का विघटन हुआ। ये नगर उत्पादन का केन्द्र थे तथा इन पर निर्वाचित प्रतिनिधियों का नियंत्रण था। इन नगरों का वातावरण और नियंत्रण सामंती प्रतिबंधो से मुक्त था। क्योंकि लोग कहीं भी आने-जाने तथा कोई भी व्यवसाय करने के लिए स्वतंत्र थे। नगरों ने कारीगरों और किसानों को आकृष्ट किया क्योंकि इन्होंने जीवन की बेहतर संभावना उपलब्ध कराई तथा सामंती शोषणों से छुटकारा दिलवाया। इन नगरों और शहरों ने कपास और गन्ना के रूप में कई फसलों के उत्पादक को प्रोत्साहित किया। कृषक को अपने उत्पाद का नकद भुगतान मिलता था। विनिर्मित वस्तुओं को बाजार में बेचा जाता था जहां विनिमय का माध्यम पैसा था। स्वामियों ने अपने जागीरदारों से सेवाओं के बजाय पैसा लेना शुरू कर दिया था क्योंकि विभिन्न उपभोग की वस्तुएं खरीदने के लिए उन्हें भी पैसे की आवश्यकता होती थी। इससे शक्तिशाली व्यापारी वर्ग का उदय हुआ। अब उन्होंने समाज में बेहतर रूतबा रखने की लालसा होने लगी। उन्होंने सामंतों स्वामियों की स्थिति को कमजोर करने के लिए शक्तिशाली सम्राटों को समर्थन देना प्रारंभ कर दिया जिससे सामंती संरचना कमजोर हो गई और इससे सामंती वर्ग का पतन हुआ।

नए विचारों के आगमन से नई चेतना का सृजन हुआ इसने पुनर्जागरण नामक नए आंदोलन को जन्म दिया अब हम पुनर्जागरण के बारे में पढ़ेंगे।

3.2 पुनर्जागरण

आधुनिक काल के प्रारंभ से विश्वास युग के अन्त और तर्क युग की शुरूआत हुई यह नवजागरण और सुधार आंदोलनों का साक्षी है इन आंदोलनों से लोगों के सांस्कृतिक, बौद्धिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में कई परिवर्तन आए। इस अवधि में शहरीकरण, परिवहन के तीव्र साधन और संचार, लोकतांत्रिक प्रणाली और समानता के आधार पर समान कानून को लक्षंणित किया गया है।

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है 'पुनर्जन्म'। यह इटली में 14वीं सदी के आसपास प्रारंभ हुआ उस समय इटली छोटे शहर राज्यों में विभाजित था। उनमें से कई शहर राज्य प्राचीन रोमन इमारतों के भग्नावशेषों पर बनाए गए थे इतालवी शहरों की भौगोलिक स्थिति ने उन्हें महान व्यापार और बौद्धिक केन्द्र बना दिया था। इसके अलावा बेनिस जैसे इतालवी शहरों की स्थिति ने उन्हें व्यापार और बौद्धिक केन्द्र बना दिया था। धन के साथ विश्व के चारों कोनों से व्यापारी कई महान विचार लाए। राजनीतिक और सामाजिक संगठन के नए रूप ने राजनैतिक स्वतन्त्रता तथा अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया। लोगों के पास अध्ययन करने और अन्य गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय था।

यह भी अत्यधिक आर्थिक विस्तार की अवधि थी। बुक कीपिंग, बिल का आदान प्रदान तथा सरकारी ऋण कई वाणिज्यिक और वित्तीय तकनीकें विकसित की गईं। इनसे इटली पुनर्जागरण का केन्द्र बन गया इस समय की प्रमुख घटनाओं में सम्मिलित थे शहरी जीवन के पुनरूत्थान, वाणिज्य के आधार पर निजी पूंजी बैंकिंग, राष्ट्र राज्यों के गठन, अन्वेषणों के लिए नए मार्गों और प्रदेशों और स्थानीय, भाषा साहित्य के विकास जो प्रिंटिंग प्रेस द्वारा लोकप्रिय था। यह नया व्यापारिक समाज कम पदानुक्रमित और अधिक धर्मनिरपेक्ष उद्देश्यों के प्रति अधिक जागरूक था। यह पहले के ग्रामीण, परंपरावादी समाज के अत्यधिक विपरीत था।विश्व आर्थिक प्रणाली प्रारंभ करने में साहसिक कार्यों एवम् खोजकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कई नई वस्तु के व्यापार मार्गों की खोज के बाद अमेरिका, एशिया और अफ्रीका से कई नई वस्तुएं लाई गई। इन वस्तुओं ने यूरोपवासियों के जीवन को समृद्ध बनाया और अधिक लाभ कमाने के लिए उत्पादन के नए तरीके विकसित करने के लिए उन्हें प्रेरित किया। परिणाम यह हुआ कि व्यापारियों उद्यमियों और बैंकरों ने सहयोग किया और राजनीतिक जीवन में तथा अन्य देशों के साथ संबंधों में ''पूंजी'' ने महत्वपूर्ण स्थान बना लिया।

इसी अवधि में सृजित नए विचारों यथा मानवतावाद, बुद्धिवाद और जाँच की भावना से लोगों के सोच में गहरा परिवर्तन हुआ। ग्रीक और रोमन सम्राज्य की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ नए सिरे से रूचिकर हो गई। मनुष्य नए विद्वानों की मुख्य चिंता का विषय बन गया। वे मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता और इस संसार में खुशी और आनंद प्राप्त करने के उनके अधिकार में विश्वास रखते थे। यह मध्यकालीन चर्च के विश्वास के विपरीत था। जो सांसारिक सुखों का विरोधी था। मनुष्य के इस सम्मान ने कला, इतिहास, भाषा, साहित्य, नीतिशास्त्र आदि में रूचि को बढ़ावा दिया। क्या आप जानते हैं कि इस समय विषयों की ''मानविकी'' के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया ।

मानवतावाद की भावना को कला और साहित्य के क्षेत्र में भी अभिव्यक्ति मिली। पुनर्जागरण कलाकारों की सबसे बड़ी उपलब्धियां चित्रकला के क्षेत्र में थी। चित्रकारों ने शरीर रचना और मानव शरीर के अनुपात का अध्ययन किया। वे मनुष्य को यथार्थवादी फॉर्म और अनुपात में चित्रित करना चाहते थे। कुछ श्रेष्ठ कलाकारों में लियोनार्डो दा विंसी, माइकल एंजेलों, रैफेल बोटिसेली और टाइटियन और मूर्तिकला के क्षेत्र में भी कलाकारों ने मुक्त खड़ी मूर्तियां बनाना शुरू कर दिया था। ये मूर्तियां अब इमारत या पृष्ठभूमि से अलग खड़ी थी और यह अलग कला थी। पुनर्जागरण के प्रथम महान मूर्तिकार डोनाटलो थे जिन्होंने 'डेविड' की मूर्ति बनाई थी लोगों ने खुद को मध्यकालीन धार्मिक प्रतिबंधों से मुक्त करना शुरू कर दिया। राष्ट्रीय पहचान और अधिक मजबूत हुई और आधुनिक यूरोपीय भाषाओं इतालवी, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी आदि को साहित्य की भाषा के रूप में परिलक्षित किया गया। अब लेखक लैटिन के बजाय स्थानीय भाषाओं में कविता, नाटक, गद्य, आदि का उपयोग करने लगे। लेखकों के कार्य में देशी भाषा के उपयोग और प्रिंटिंग प्रेस के प्रारंभ होने के कारण लोगों की एक बड़ी संख्या के लिए सुलभ हुए। बाइबिल मुद्रित किया गया था और लोगों की बड़ी संख्या द्वारा पढ़ा गया आधुनिक यूरोपीय भाषाओं में तैयार किए गए अनेक कार्यो में दो प्रमुख

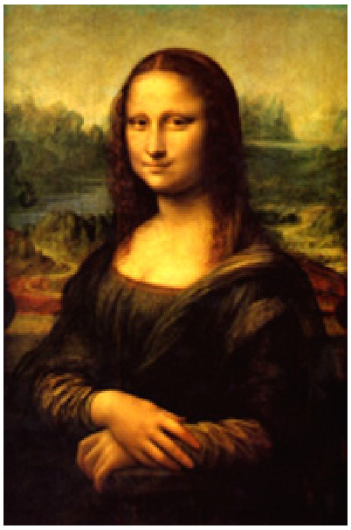

चित्र 3.1 लियोनार्डो द विंसी की मोनालिसा

कार्य हैं डेन्टे की डिवाईन कोमेडी, इरासमस, इन प्रेज ऑफ फोली मैकविली की द प्रिन्स एंड करवैनटीज डानक्योजो। पुनर्जागरण के उत्तरार्ध में यूरोप के इतिहास में दो विकास हुए पहला प्रोटेस्टेंट सुधार था जो ईसाई धर्म में विभाजन का परिणाम दूसरे रोमन कैथोलिक चर्च के भीतर से संबंधित सुधार था आम तौर पर कैथोलिक सुधार या काउंटर सुधार के रूप में माना जाता है सुधार सामाजिक-धार्मिक और राजनीतिक आंदोलन का एक हिस्सा था जिससे आधुनिक विश्व का उत्पत्ति हुई।

क्रियाकलाप 3.1

बुद्धिवाद, मानववाद, जांच, अवलोकन, प्रयोग और तर्क कुछ विचार थे जो पुनर्जागरण काल के दौरान आए। इनके अर्थ खोजें और इनकी उपयोगिकता को आज हमारे जीवन से जोड़कर देखें

3.3 धर्म सुधार

मध्यकालीन कैथोलिक चर्च के आगमन को अंधविश्वास, भ्रष्टाचार और धन के लालच से जुड़ा माना गया। अंधविश्वासी किसानों को चर्च द्वारा आश्वस्त किया गया कि सच्चा क्रॉस उसके पास है। लोग सच्चे क्रॉस के रूप में लकड़ी के एक टुकड़े को देखने के लिए शुल्क का भुगतान करने लगे थे क्योंकि यह माना जाता था कि पवित्र अवशेष में स्वस्थ करने की शक्ति थी। अंधविश्वास पर अधिक जोर देता था ताकि यह श्रद्धालुओं से अधिक पैसे ऐंठ सके। चर्च तक के जगह यह सब पुर्नजागरण के आने साथ बदल रहा था। पुनर्जागरण की नई भावना में कुछ भी स्वीकार नहीं किया जा सकता था। क्या आपको पता है कि यह 1517 ई. में मार्टिन लूथर नामक एक जर्मन पुजारी ने पहले रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकारियों को चुनौती दी उसके अनुसार, बाइबिल धार्मिक अधिकार का एकमात्र स्रोत था। उनका मानना था कि चर्च पर अंध विश्वास करने के बजाय यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से मोक्ष-प्राप्त किया जा सकता है।

उसने चर्च की कुछ प्रथाओं का विरोध किया जैसे कि सबसे ऊँची बोली लगाने वाले को चर्च के पदों का तथा पोप स्वीकारोकित पत्रों का बेचा जाना। लूथर को जर्मनी के राजकुमारों का संरक्षण प्राप्त था क्योंकि उसमें चर्च की संपति जब्त करने की इच्छा थी। परंतु उसके चर्च के विरूद्ध लेख लिखने से मना करने पर, 3 जनवरी 1521 को पोप लियो दसवे ने उसे धर्म से बाहर कर दिया।

चित्र 3.2 मार्टिन लूथर

लूथर के विचारों ने पश्चिम में प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार की शुरूआत की और ईसाई जगत को दो भागों में बांट दिया, प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक। उसके अनुसार ईसाईयों को मुक्ति ईसा मसीह के बताए रास्ते पर चलने से मिलती न कि पोप स्वीकारोक्ति पत्र खरीदने से। हालांकि इग्लैंड में धर्म सुधार आंदोलन लूथर के विचारों से प्रभावित था परन्तु यह वहां के राजा हेनरी आठवें

के अपनी पत्नी कैथरीन को तलाक देने के प्रयासों से शुरू हुआ। राजा के प्रधानमंत्री थामस कार्नवेल ने संसद में दो कानून पारित करने में मदद की-ये थे अपीलों को रोकने का अधिनियम तथा संप्रभुता का कानून। इन कानूनो ने राजा को चर्च की शाही अध्यक्षता प्रदान कर दी। राजा को एक साधारण महिला अन बोलिन से विवाह करने की अनुमति मिल गई

धर्म सुधार आंदोलन धार्मिक जगत में उलट पुलट होने का कारण सिद्ध हुआ। कैथोलिक चर्च में एक धर्म सुधार आंदोलन अपने से शुरू हुआ जिसे प्रति-धर्म सुधार कहा जाता है। इसका उद्‌देश्य भ्रष्टाचार को कम करने और कैथोलिक चर्च को सुधारना और सुदृढ़ करना था। इसकी शुरूआत स्पेन में हुई जहां इग्नेशियस लॉयल ने 'यीशु का समाज' की स्थापना की, जिसने पवित्रता, मिशनरी कार्य, दूसरों की मदद और ईश्वर की सेवा पर बल दिया। जो आँदोलन मार्टिन लूथर ने आरम्भ किया वह इंग्लैंड के राजा हेनरी आठवें, हुल डरिक जिंवग्ली और जॉन काल्विन के प्रयासों से पूरे यूरोप में फैल गया।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. रिक्त स्थान भरें
   (क) .... ने मानव की सृजनात्मक क्षमता पर अपने विचार व्यक्त किए।
   (ख) इग्नेशियस लॉयल ने .... की स्थापना की।
2. सामंतवाद की परिभाषा दें तथा इनके कम से कम दो लक्षण बताएं।
3. रिनेसां (पुनर्जागरण) के मुख्य विचार क्या थे?
4. मार्टिन लूथर की दो शिक्षाएं बताएं जिनसे चर्च में सुधार प्रभावित हुए।

3.4 विज्ञान विकास

पुनर्जागरण के दौरान, विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियों की गई थी। हमने पहले से ही पढ़ा है कि पुर्नजागरण के विचारकों ने अंधविश्वास के कारणों पर अधिक जोर दिया और समझा कि ज्ञान अवलोकन और प्रयोग के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने परंपराओं और मान्यताओं तथा अंधविश्वास को अस्वीकार कर दिया। इससे वैज्ञानिक जांच की शुरूआत हुई जिसे लोग भुला चुके थे। पुनर्जागरण से विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्ति आ गई।

लियोनार्डो दा विंसी जैसे कलाकारों ने शरीर रचना विज्ञान और प्रकृति को विज्ञान और कला के एक अनूठे मिश्रण के रूप में प्रस्तुत किया। माइकल सेरवाटस, एक स्पेनिश चिकित्सक ने रक्त के परिसंचरण की खोज की। विलियम हार्वे, एक अंग्रेज ने हृदय द्वारा रक्त को शुद्ध करने और नसों के माध्यम से इसके परिसंचरण को समझाया। ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी शुरूआत हुई पुनर्जागरण ने वैज्ञानिकों द्वारा किए प्रयासों अवलोकन और प्रयोगों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

विज्ञान में पुनर्जागरण की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियाँ खगोल विज्ञान के क्षेत्र में हुई। क्या आपने कोपर्निकस केप्लर और गैलिलियों के बारे में सुना है? वे महान खगोलशास्त्री थे, जिन्होंने सिद्ध

किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है। पुनर्जागरण से पहले, यह माना जाता था कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हैं। उन्होंने यह तर्क दिया कि सूर्य और ग्रहों के बीच एक कक्षीय गति में चुंबकीय आकर्षण है। आइजैक न्यूटन ने सार्वभौमिक गुरूत्व का सिद्धांत दिया। अपने द्वारा बनाई दूरबीन से गैलीलियो ने बृहस्पति के चन्द्रमाओं की खोज की, शनि के छल्ले और सूर्य को देखा। उसने कोर्पार्निकस की खोजों की पुष्टि की। पुनर्जागरण ने अन्य क्षेत्रों और अन्य लोगों के बारे में गोरों के मन में एक जिज्ञासा का विकास किया। अब हम पता करेंगे कि यह कैसे हुआ।

3.5 नई भूमि की खोज

जांच की भावना ने कई साहसिक लोगों को नई भूमि की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया नये व्यापार मार्गों की खोज ने दुनिया के इतिहास को बदल दिया। यह कहा जाता है कि भागवान, प्रतिष्ठा और सोना इन खोजो कां मुख्य उद्देश्य थे। लेकिन सोना या आर्थिक जरूरत का उद्देश्य सबसे महत्वपूर्ण था। भौगोलिक खोजों से पहले, यूरोपीय दुनिया पूर्व से मसाले कपास, जवाहरात, रेशम, आदि वस्तुएं मंगाते थे जिसकी आपूर्ति के लिए उन्हें अरबी और इस्लामी प्रदेशों के बीच यात्रा करनी पड़ती थी। और यह सुविधा जनक नहीं था। ये अनिश्चितताओं से भरा था। पूर्व एशिया के लिए एक सीधे समुद्री मार्ग की खोज हुई और इसमें व्यापार की क्षमता थी। खोजकर्ताओं का एक और मकसद था जो था नए क्षेत्रों के लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना यह उनके लिए भगवान की सेवा का एक मौका बन गया। इसके अलावा साहसी लोगों ने नई भूमि की खोज के द्वारा प्रसिद्धि मिली। कुछ तो वास्तव में बहुत प्रसिद्ध हो गए। आपने वास्को दा गामा द्वारा भारत की और कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज के बारे में सुना है। क्या आप जानते हैं फर्डिनांड मैगलन पहला अन्वेषक था जिसने दुनिया के चारों ओर चक्कर लगाने के अभियान का नेतृत्व किया। वारथोलोमव डियाज एक और प्रसिद्ध अन्वेषक था।

तुम्हें क्यों लगता है कि महान रोमांची यात्रा राजा और अमीर लोगों द्वारा प्रायोजित की गई थी? व्यापार और औपनिवेशीकरण में जबरदस्त वृद्धि से यूरोपीय धन वृद्धि पर एक महान प्रभाव पड़ा। एक सबसे प्रसिद्ध राजा जो यात्रा को प्रायोजित करता था पुर्तगाली था। वह था राजा हेनरी जो हेनरी नेविग्रटर के रूप में भी जाना जाता है। इन खोजों के लिए तकनीकी आधार कम्पास, वेधयंत्रकी, खगोलीय सारणी और नक्शे बनाने के कला के आविष्कार से हुआ। इन यात्राओं से विश्व के विभिन्न भागों में जैसे- अफ्रीका, अमेरिका और एशिया में व्यापारिक चौकी बनाने और औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। अब वाणिज्यिक रूचि अटलांटिक महासागर से भूमध्य सागर से स्थानांतरित हो गई। कई नई वस्तुएं जैसे तम्बाकू, गुड़, शुतुरमुर्ग पंख, आलू, आदि व्यापार में शामिल की गई। इसने अमानवीय दास व्यापार की शुरूआत की। गुलाम अफ्रीका से पकड़ कर अटलांटिक महासागर के पार और उत्तरी अमेरिका में वृक्षारोपण में काम करने के लिए बेचे जाते थे। इन व्यापार पद्धतियों और नई समुद्री मार्गों

चित्र 3.3 : वास्को दा गामा

की खोज ने यूरोपीय व्यापारियों को विशाल धन जमा करने के लिए और नई मशीनों के विकास में निवेश के लिए मदद दी। यह औद्योगिक क्रांति थी जिसने उन्हें और अधिक शक्तिशाली और अमीर बना दिया।

क्रियाकलाप 3.2

दुनिया के मानचित्र पर वास्को दा गामा, फर्डिनांड मेगलन और क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा खोजे नए समूद्री मार्गो को अंकित करे।

3.6 औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक क्रांति 1750 में इंग्लैंड में शुरू हुई यह संभव इसलिए हो सका क्योंकि अंग्रेज व्यापारियों ने विदेशी व्यापार के माध्यम से भारी धन इकट्ठा किया था और उसके उपनिवेश कच्चे माल की आपूर्ति के लिए सुरक्षित थे। उपनिवेश तैयार माल के लिए संभावित बाजार के रूप में देख जाते थे। इसके अलावा, इंग्लेंड में कोयला और लोहा उद्योगों को चलाने के लिए आवश्यक संसाध्नों की विशाल राशि थी। इस प्राकर, पूंजीपतियों के लिए नई मशीनों के विकास में निवेश करने और अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से उत्पादन को गति मिली।अब मशीनों ने मनुष्य और पशुओं को उत्पादन के कार्य से हटा दिया। नई मशीनरी से उत्पादन में सुधार हुआ। पर इसने समाज को दो भागों में बांट दिया। पूंजीवादी या पूंजीपति वर्ग और मजदूर। आप अगले पाठ में ओद्योगिक क्रांति के बारे में और अधिक पढेंगे।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. सही उत्तर चुनें :
   (क) किसने भारत आने के समुद्री मार्ग की खोज की?
   (अ) बारथोलोमेव डियाज (ब) वास्को दा गामा
   (स) कोलम्बस (द) इनमें से कोई नहीं
   (ख) इनमें से क्या खोज की यात्राओं के परिणाम नहीं था?
   (अ) एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशों की स्थापना।
   (ब) यूरोपीय वाणिज्य का विस्तार।
   (स) उपनिवेशों की समृद्धि में वृद्धि।
   (द) गुलाम व्यापार की शुरूआत।
2. विज्ञान के क्षेत्र में पुर्नजागरण के कम से कम दो योगदान बताएं।
3. कम से कम तीन आविष्कार बताएं जिनसे नए समुद्री मार्ग खोजने में यूरोपीयों को मदद मिली।
4. औद्योगिक क्रांति के कारण समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन को पहचानें।

3.7 क्रांतियों का युग

1848 ई. में यूरोपीय क्रांतियों से पारंपरिक अधिकार के विपक्ष में राजनीतिक उथल पुथल का दौर आया। राजनीतिक नेतृत्व और लोगों में एक बहुत मजबूत असंतोष ने राज्यों के मामलों में अधिक भागीदारी की मांग करना शुरू कर दिया। राजनीतिक जागरूकता, स्वतंत्रता के विचार, समानता और भाईचारा, प्रिंटिंग प्रेस द्वारा लोकप्रिय हो गया जो क्रांतियों में सबसे महत्वपूर्ण थे। क्रांतियाँ अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली और रूस में हुई। ब्रिटेन में गौरवपूर्ण क्रांति के साथ एक प्रमुख बदलाव आया। संयुक्त राज्य अमेरिका, अमेरिकी युद्ध और रूस मजदूरों के आंदोलन से एक समाजवादी सरकार की स्थापना के रूप में उभरा। इन कई राज्यों ने प्रबुद्ध विचारों को प्रोत्साहित किया आज़ादी और राष्ट्रवाद की भावना पैदा की। अब हम इन क्रांतियों के बारे में पढ़ेंगे।

3.7.1 गौरवपूर्ण क्रांति

1688 की गौरवपूर्ण क्रांति इंग्लैंड में हुई और अन्य दुनिया के लिए प्रेरणा का एक स्रोत बनी। इसे गौरवपूर्ण क्रांति कहा जाता है। क्योंकि बिना खून-बहाए इसे सफलता प्राप्त हुई थी स्टुअर्ट राजा जेम्स द्वितीय ने अपने देशवासियों का लोकप्रिय समर्थन खो दिया था। यह उसके अपने लोगों के प्रति कठोर, रवैया के कारण हुआ था। एक महंगी स्थायी सेना का निर्माण और सरकार में रोमन कैथोलिक लोगों के रोजगार में वृद्धि, सेना और विश्वविद्यालयों ने लोगों को गुस्सा दियाला। नाराज संसद राजा जेम्स द्वितीय को सिंहासन से हटाना चाहते थे और उसकी बेटी मैरी द्वितीय को सिंहासन पर बिठाना चाहते थे। इससे पता चलता है कि निरंकुश शासन को बदल दिया गया और एक संवैधानिक सरकार की स्थापना हुई। संसद को सम्राट को बदलने की शक्ति थी।

3.7.2 आजादी के लिए अमेरिकी युद्ध

यह जानना दिलचस्प होगा कि कुछ राजनैतिक अधिकार हैं जो हमें आज मिलते हैं वो दो बहुत महत्वपूर्ण क्रांतियों की देन है जो 18वीं सदी के अन्त में हुई। इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई आधुनिक विश्व के निर्माण में। ये हैं अमेरिकी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति। इन क्रांतियों के माध्यम से, लोगों ने अपने अधिकारों के लिए लडना शुरू किया।

16 वीं शताब्दी के आसपास इंग्लैंड में धार्मिक उत्पीड़न की वजह से यूरोपीय अमेरिका में बसे थे। उनमें से कुछ आर्थिक अवसरों से आकर्षित थे। उनमें 13 उपनिवेश थे जो स्थानीय विधानसभाओं द्वारा अपनी समस्याओं का निपटारा करते थे। वाणिकवाद की ब्रिटिश आर्थिक नीति लागू थी जिसके माध्यम से ब्रिटिश अपने हित में औपनिवेशिक वाणिज्य को विनियमित करने की कोशिश करते थे और उपनिवेशों को उद्योग स्थापित करने की आज्ञा नहीं थी और उन्हें लोहा कपड़े जैसे ब्रिटिश माल खरीदने पड़ते थे। वे केवल इंग्लैंड द्वारा निर्धारित कीमतों पर चीनी, तम्बाकू, कपास, आदि का निर्यात करते थे। जिसने ब्रिटिश अमेरिकी उपनिवेशों को विरोध लिए उकसाया

18वीं सदी तक, फ्रांस के साथ और भारत में युद्ध इग्लैंड के लिए बहुत महंगे साबित हो गए। इन युद्धों को लड़ने के लिए पैसे की जरूरत थी और उसे अमेरिकी उपनिवेशों से करों के द्वारा पूरा किया जाता था। 1765 में, ब्रिटिश संसद ने सरकारी दस्तावेजों कर्म बधक समाचार पत्रों

और पर्चे की तरह सभी व्यापार लेनदेन पर स्टाम्प अधिनियम परित कर दिया। राजस्व को अमेरिका में 10,000 ब्रिटिश सैनिकों को बनाए रखने की लागत का भुगतान करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। अधिनियमों का उपनिवेशकों द्वारा विरोध किया गया। दंगों ने औपनिवेशिक बंदरगाह शहरों को तबाह कर दिया। औपनिवेशिक विधानसभाओं ने स्टाम्प अधिनियम के खिलाफ संकल्प पारित कर दिया। ब्रिटिश संसद ने 1766 के स्टाम्प अधिनियम को निरस्त कर दिया। हालांकि, संसद ने चाय पर कर जारी रखा। 16 दिसम्बर 1773 को ईस्ट इंडिया कंपनी के तीन जहाजों पर से चाय को समुद्र में फेंक दिया। इस घटना को वोस्टन की चाय पार्टी के रूप में जाना जाता है। संसद ने बोस्टन के बंदरगाह को बंद कर दिया लेकिन अमेरिका की आजादी के लिए युद्ध की शुरूआत हो गई थी।

13 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने 1774 में फिलाडेल्फिया में पहली महाद्वीप कांग्रेस की बैठक बुलाई और इंग्लैंड के राजा से अपील की, कि उनकी सहमति के बिना करों को लागू नहीं करें। राजा ने इसे विद्रोह माना और युद्ध की घोषणा कर दी। लड़ाई के अंत में 4 जुलाई 1776 में फिलाडेल्फिया की कांग्रेस ने ब्रिटेन से स्वतंत्रता और एक सहकारी संघ के गहन की घोषणा कर दी। इसमें समानता पर जोर देने के साथ पूरी दुनिया को जीवन, स्वतन्त्रता और खुशी से रहने लिए प्रेरित किया। विधेयक ने भाषण, प्रेस, धर्म और कानून के तहत न्याय की स्वतंत्रता प्रदान की। अमेरिकी क्रांति एक संघर्ष था जिससे तेरह अमेरिकी उपनिवेशों को ब्रिटेन से आजादी मिली और एक राष्ट्र को जन्म दिया जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका कहा जाता है।

क्रियाकलाप 3.3

कल्पना किजिए कि आप एक अखबार के रिपोर्टर हैं जो बोस्टन चाय पार्टी को एक गवाह थे। आपने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों, अमेरिकियों जिन्होंने इसमें भाग लिया और मुसाफिरों का साक्षात्कार करने का कार्य किया। इस कहानी पर अखबार के लेख लिखे। इसके अलावा, क्या होना चाहिए था के बारे में अपनी राय दें।

3.7.3 फ्रांसीसी क्रांति

18 वीं सदी में फ्रांसीसी समाज अभी भी पूरी तरह सम्राट के पूर्ण अधिकार के साथ सामंती था। यह तीन वर्गो या सम्पदा में विभाजित किया गया था। पादरी या चर्च, पहला इस्टेट, कुलीन वर्ग या दूसरा एस्टेट। पहले दो एस्टेट विलासिता और धर्म पर कई विशेषाधिकारों और देश के शासन का आनंद लेते थे। किसान आम लोग, शहर के श्रमिकों और मध्यम वर्ग के रूप में आम आदमी तीसरी एस्टेट में थे और भारी करों के बोझ तले दबे थे।

फ्रांस की आंतरिक हालतों ने क्रांति के लिए एक आदर्श मंच बनाया है। लुईस सोलवे और उनकी पत्नी के जो कि शौली के कारण सरकारी खजाना खाली हो गया और राष्ट्र दिवालिया हो गया। लुईस को तीनों एस्टेट की 1789 में एक बैठक बुलाने के लिए मजबूर किया गया। वह नए कर कानून के लिए मंजूरी हासिल करना चाहता था। तीसरे एस्टेट ने विशेषाधिकार कराधन उन्मूलन में समानता की मांग की। उन्होंने अपने लिए एक राष्ट्रीय असेंबली बनाने की घोषणा की और सारे अधिकार सम्राट से ले लिए। एक ऐतिहासिक फ्रेंच दस्तावेज, आदमी और नागरिक अधिकार

की घोषणा को अपनाया गया। यह अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा से प्रभावित था, सभी पुरूषों की समानता, लोगों संप्रभुता और स्वतंत्रता के अधिकार संपति, सुरक्षा, सही शिक्षा पर जोर देते हुए, मुक्त भाषण को अपनाया सभी गरीबों की सार्वजनिक सहायता, प्रतिबंध, यातना और गुलामी से मुक्ति को अपनी सरकार चुनने की मान्यता और सार्वजनिक कार्यालयों में रोजगार के लिए सभी नागरिकों को समानता दी गई। फ्रांसीसी क्रांतिकारी युद्धों और नेपालियान के युद्धों से जो 1789 से शुरू हुए और 15 वर्षों तक चले फ्रंसीसी गणराज्य का गठन किया। फ्रांसीसी क्रांति ने यूरोप की मध्ययुगीन संरचनाओं का अंत किया और उदारवाद और राष्ट्रवाद के नए विचारों से फ्रांस में एक पूर्ण परिवर्तन, प्रशासन, सेना, समाज, और संस्कृति में परिवर्तन हुआ। फ्रांस नेपोलियन बोनापार्ट के तहत एक गणतंत्र बन गया फ्रांसीसी क्रांति एक मार्गदर्शक सिद्धांत स्वतंत्रता, भाईचारा समानता थे। क्रांतिकारियों कई प्रबुद्धता विचारकों वॉल्टेअर, मॉनटेस्क्यू और रोसियो जैसे दार्शनिकों के विचार से प्रेरित थे।

आजादी के अमेरिकी युद्ध और फ्रांसीसी क्रांति ने दुनिया भर में राष्ट्रवाद की भावना को लोकप्रिय बनाया। अमेरिका से राष्ट्रवाद के विचारों ने फ्रांस, ब्रिट्रेन और इटली को प्रभावित किया परिणाम में 1861 की इटली ने एकीकृत राज्य के लिए क्रांति की।

क्रियाकलाप 3.4

नीचे दिए गए फ्रांस और अमेरिका के झंडे हैं। आपको क्या लगता है कि इन झंडों ने फ्रांसीसी क्रांति और आजादी के अमेरिकी युद्ध में क्या भूमिका निभाई? अलग रंग क्या दर्शाते हैं। क्या आपको पता है, भारतीय ध्वज ने स्वतंत्रता संग्राम में ऐसी ही भूमिका निभाई थी?

अमेरिकी नक्शे में सितारों की संख्या की गिनती करें। तुम्हें क्या लगता है यह किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? अमेरिका के वर्तमान समय के ध्वज पर सितारों की संख्या की गिनती करें।

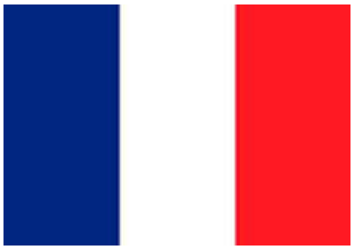

चित्र 3.4 फ्रांसिसी क्रांति के दौरान फ्रान्स का ध्वज

चित्र 3.5 अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का ध्वज

3.7.4 इटली का एकीकरण

18 वीं सदी में, इटली कई राज्यों का एक समूह था प्रत्येक का अपना स्वंय का सम्राट और परंपरा थी। उनमें से कुछ थे वेनेतिया, दो सिसिलाइस, पापल राज्य, सार्डिनिया, तसकनी आदि। मध्य युग के दौरान पोप की दोनों, धार्मिक और राजनितिक मामलों में प्रभाव में वृद्धि हुई। पोप का कुछ राज्यों पर राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया था जिन्हें पापल के राज्य कहते थे। जल्दी ही इटली ने अपने महत्व में वृद्धि करना शुरू कर दिया। पोप के राज्य राजनीतिक जीवन, बैंकिंग और विदेशी व्यापार का केंद्र बन गए। पुनर्जागरण के दौरान, इटली का महत्व अन्य राज्यों से जिसके बारे में आप पहले ही पढ़ चुके हैं बढ़ गया कई सालों तक फ्रांस और पवित्र रोमन साम्राज्य ने इटली के लिए युद्ध लड़े। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने इटली के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इटली के राजाओं ने खतरे को भांप कर युरोपी देशों से रिश्ते बनाए जो फ्रांस के विरोधी थे। बाद में फ्रांस एक गणतंत्र बन गया, गुप्त क्लब का पूरे इटली भर में गठन किया गया। 1796 से 1814 तक जब नेपोलियन बोनापार्ट यूरोपीय शक्तियों से हार गया। तो कई इतालिवयों ने एक ऐसे संयुक्त इटली की संभावनाएं देखी जो विदेशी नियंत्रण से मुक्त हो।

मज्जिनी और गैरीबलदी ने गुप्त समाजों के साथ साथ कई क्रांतिकारी इतालवियों ने एक स्वतंत्र एकीकृत गणराज्य के विचार के प्रसार को जारी रखा। 1849 के बाद से, पाईडमोन्ट सरडिनिया जिसका राजा विक्टर एम्मनुऐल था ने एकीकरण में एक सक्रिय भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में केबोर, जो प्रधानमंत्री था ने अस्द्रिया से लोम्बार्डी तुस्केनी, मोडेना आदि को मुक्त करवाया। गैरीबाल्डी ने विद्रोह का नेतृत्व सिसिली और नेपल्स में किया उसने दो राज्यों का प्रभार एम्मनुऐल को सोप दिया उसे इटली का राजा बना दिया। बाद में, रोम और वेनतिया इतालवी राज्यों के संघ में शामिल हो गए। इटली के एकीकरण की प्रक्रिया 1815 में वियना की कांग्रेस के साथ शुरू हुई और फ्रांसीसी प्रशिया युद्ध के साथ 1871 में समाप्त हुई।

3.7.5 जर्मनी का एकीकरण

1815 में नेपोलियन की हार के बाद, कई जर्मन एक स्वतंत्र जर्मनी चाहते थे। जर्मनी 39 छोटे राज्यों का संघ था और ऑस्ट्रिया और प्राशिया के नेतृत्व में था। ये राज्य हमेशा एक दूसरे के साथ युद्ध की स्थिति में थे, प्रशिया को राजा, कैसर विलियम प्रथम प्रधानमंत्री विस्माक को प्रशिया के शासन के अधीन जर्मनी को एकजुट, करना चाहता था और ऑस्ट्रिया और फ्रांस को पूरी तरह से बाहर रखना चाहता था बिस्मार्क निडर था और उसे जर्मनी के एकीकरण की तत्काल आवश्यकता में विश्वास था यह उसने सेना के आधुनिकीकरण के साथ शुरू किया, उसने खून और आयरन की नीति के लिए जाना जाने लगा और उसने लौह चासंलर की उपनाम अर्जित किया।

चित्र 3.6 : ओटो वोन बिस्मार्क

सेना में सुधार के साथ, बिस्मार्क ने स्वेलिबिग होलस्टेन की जर्मन आबादी को उसके डेनमार्क शासक के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया। 1864 में, बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया के साथ डेनमार्क के खिलाफ हाथ मिलाया। विस्मार्क का अगला लक्ष्य था ऑस्ट्रिया। ऑस्ट्रिया को पराजित कर उत्तर जर्मन कॉन्फेडरेशन का गठन किया। बिस्मार्क ने इटली को वेनिस के प्रान्त का वादा किया और उसे युद्ध से बाहर रखा। ऑस्ट्रिया का इटली से नियंत्रण खत्म कर दिया उसने फ्रांस के नेपोलियन तृतीया को क्षेत्रीय मुआवजा देने का वादा किया और उसे युद्ध के बाहर रखा। उसे पहले से ही रूसी नियंत्रित पोलैंड में विद्रोह दबाने के बदले रूस का समर्थन हासिल था।

प्रशिया के जर्मनी में प्रभुत्व के लिए अब केवल दो बाधा थी, दक्षिणी जर्मनी के चार छोटे जर्मन राज्य और फ्रांस के नेपोलियन तृतीय की अस्वीकृति। लेकिन दोनों देशों के बीच असहमति ने फ्रांस को प्रशिया से युद्ध के लिए उकसाया। फ्रांको-प्रशिया युद्ध काफी छोटा था। प्रशिया ने 1871 में फ्रांस पर आक्रमण किया और हराया। नेपोलियन को सिंहासन त्यागने और फ्रांस के अलसास और लौरेन देने के लिए मजबूर किया गया। शेष जर्मन राज्यों पर ऑस्ट्रिया को छोड़कर कब्जा कर लिया, और वे जर्मनी के साथ शामिल हो गए। जर्मनी का एकीकरण कैसर विलियम के द्वारा पूरा किया गया। जल्द ही जर्मनी यूरोप में अग्रणी बन गया और उसने अपने आर्थिक हित को आगे बढ़ाया दुनिया में जर्मन प्रभाव बढ़ाने के लिए यह एक औपनिवेशिक साम्राज्य के रूप में उभरा।

3.7.6 समाजवादी आंदोलन और रूसी क्रांति

औद्योगिक क्रांति ने एक असमान समाज की स्थापना की। एक ओर गरीब, शोषित और बिना किसी अधिकार के लोग थे, और दूसरे तरफ पूंजीपतियों सभी विशेषाधिकारों का अनंद उठाते थे। इसी समय कुछ लोगों सोचना शुरू किया कि समाज में सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में समानता होनी चाहिए। समानता, भाषण की स्वतंत्रता और लोकतंत्र के विचारों ने इस सबंध में प्रोत्साहन दिया। समाजवाद के विचार जो समान समाज की स्थापना की कोशिश करते हैं ने अपनी जड़ें जमानी शुरू की। समाजवाद के सबसे ताकतवर और प्रभावशाली विचार कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स के द्वारा दिए गये। अपनी पुस्तक दास कैपिटल में, मार्क्स ने कहा सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का उदाहरण है। पूँजीपति श्रमिकों के वर्ग संघर्ष करने की कोशिश करते है। उसने भविष्यवाणी की कि वर्ग संघर्ष पूंजीवाद के अंत के साथ सफल हो सकता है और वह समाजवाद के आने से होगा।

इसका पहला व्यावहारिक उदाहरण रूसी क्रांति है जिससे दुनिया की पहली समाजवादी सरकार की स्थापना हुई। रूस औद्योगिक रूप से पिछड़ा था और एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पर आधारित था। जार एक निरंकुश और दमनकारी शासक था, इसलिए मजदूरों और किसानों को बहुत मुश्किल का सामना करना पड़ा। 1905 की क्रांति ने ड्यूमा के गठन के साथ एक संवैधानिक राजशाही के गठन का नेतृत्व किया। 1905 की क्रांति के बाद भी नागरिक अधिकार और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व सीमित था और इसलिए अशांति जारी रही।

1917 में, रूस में एक और क्रांति हुई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह रूसी मजदूरों और किसानों और रूस में रहने वाले गैर रूसी लोगों की हालत जार निकोलस द्वितीय के निरंकुश शासन के अधीन बुरी थी। वे काफी दुखी थे। अमानवीय काम की परिस्थितियों और करों की विशाल राशि के साथ साथ उनका शोषण किया जा रहा था इसलिए लोग उसके खिलाफ उठे। लोगों को किसी राजनीतिक अधिकारों की मनाही थी। और रूस ने अपनी साम्राज्यवादी इच्छाओं के लिए प्रथम विश्व युद्ध में भी प्रवेश कर लिया था। लेकिन ऐसा करना अनुचित था रूसी सैनिकों हजारों की संख्या में प्रथम विश्व युद्ध में मारे गए थे। वे बीमार थे और बिना गर्म वर्दी या हथियारों से लैस थे साइबेरिया की ठंडे रेगिस्तान में लड़ने के लिए। कई कुशल श्रमिकों को सेना में भर्ती किया गया। और उनको मौत के लिए युद्ध में लड़ने के लिए मजबूर किया गया। कुलीन वर्ग भी जार निकोलस द्वितीय के निरंकुश तरीके के कारण असंतुष्ट थे। अकाल से देश में स्थिति बिगड़ गई। श्रमिकों ने अदालतों, जेलों और कार्यालय परिसर पर हमला किया। समाज के सभी वर्गों के बीच व्यापक असंतोष था। सेना में गोला बारूद का अभाव था। शहरों में भोजन का अभाव था जबकि किसानों को अपनी उपज के उचित दाम नहीं मिल रहे थे। इस सरकार ने मुद्रास्फीति के कारक रूबल नोटो को लाखों में छापा। स्थिति जार के हाथ से फिसल गई।

चित्र 3.7 : 18 जून 1917 पैट्रोग्राद में लोगों द्वारा प्रदर्शन

यह स्थिति मार्कस और टॉल्स्टॉय के लेखनों से और बिगड़ गई इसने लोगों विशेष रूप से श्रमिकों को प्रभावित किया, और उनकी राजनीतिक जागृति के लिए कारण बने। सोवियत संघ की श्रमिकों की परिषद के गहन को फरवरी 1917 में जार द्वारा अपदस्थ कर दिया गया। और एक अस्थायी सरकार मैनशेविक रूसी साम्यवादी पार्टी के नियंत्रण के तहत स्थापित की गई लेकिन सरकार लोगों की मांगों को पूरा करने में विफल रही है। एक अन्य पार्टी बोल्शेविक ने लेनिन की अध्यक्षता में सोवियत संघ का आयोजन किया और अक्टूबर 1917 में सरकार की जगह ले ली। यह अक्टूबर

क्रांति रूसी क्रांति का अंतिम चरण था, इसने जार के शासन को समाप्त कर दिया और सोवियत संघ का गठन हुआ जिसने एक नई विश्व व्यवस्था का नेतृत्व किया।

अगले पाठ में आप औद्योगीकरण साम्राज्यवाद, और विश्व युद्धों के बारे में अधिक पढ़ेंगे। आप समझेंगे की कैसे औद्योगिक क्रांति ने दुनिया का चेहरा बदल दिया और लोगों के जीवन में जबरदस्त बदलाव आया। आप दुनिया के गैर औद्योगिक देशों और उनके संघर्ष के बारे में पढ़ेगे जिससे विश्व को भयानक युद्धों का सामना करना पड़े।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. सही जवाब चुनें :

   क) अमेरिका को कितने उपनिवेशों में विभाजित किया गया था?

   अ) 13 ब) 14 स) 15 द) 16

   ख) फ्रांस के तीसरे एस्टेट में शामिल थे

   अ) अभिजात ब) पादरी स) आम लोग द) राजशाही

   ग) जर्मन एकीकरण का नेतृत्व किसने किया

   अ) कैवर ब) मैजिनी स) विस्मार्क द) गैरीबाल्डी

2. "1688 की गौरवपूर्ण क्रांति विश्व के लिए प्रेरणा का एक स्रोत थी"। 30 शब्दों में सिद्ध कीजिए।
3. आजादी के अमेरिकी युद्ध और फ्रांसीसी क्रांति के बीच कम से कम दो समानताएं लिखिए।
4. रूसी क्रांति समाजवाद की विचारधारा से प्रेरित थी। संक्षेप में व्याख्या करें।

आपने क्या सीखा

- मध्यकाल में सामंती क्रम टूटने के परिणामस्वरूप कस्बों शहरों, वाणिज्यक कृषि और व्यापारी वर्ग की उत्पत्ति हुई।
- पुनर्जागरण या पुनर्जन्म यूरोप में 14 वीं के मध्य के आसपास शास्त्रीय ग्रीक और रोमन सभ्यताओं की सांस्कृतिक उपलब्धियों में एक नए सिरे से रूचि के साथ शुरू हुआ। इसने लोगों के सोचने के तरीके में बदलाव किया।
- मानवतावाद के विचार ने मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता पर जोर दिया और मनुष्य मानवतावादियों के अध्ययन का विषय बन गया।

- धर्म सुधार चर्च की प्रथाओं पर सवाल का एक प्रयास था। यह जर्मनी में मार्टिन लूथर द्वारा शुरू किया गया। शीघ्र ही यह कैथोलिक और प्रोटेसेंट में ईसाई दुनिया के विभाजन का कारण बना।
- पुनर्जागरण की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक था समझदारी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक विज्ञान का विकास। कोपर्निकस, केपलर, गैलीलियो और न्यूटन को इस क्षेत्र में उनके योगदान के लिए याद किया जाता है।
- पुनर्जागरण अन्वेषण की और भूमि की खोज की चाहने यात्राओं को नेतृत्व प्रदान किया इन यात्राओं का दुनिया के एक बड़े हिस्से पर प्रभाव पड़ा।
- औद्योगिक क्रांति 1750 के आसपास से इंग्लैंड में शुरू हुई। औद्योगिक क्रांति के आने से औद्योगिक उत्पादन की दर में कई गुना वृद्धि हुई इसने औद्योगिक श्रमिक सर्वहारा वर्ग बनया जिसका बुरी तरह से पूंजीपति वर्ग द्वारा शोषण किया जाता था।
- 1776 की अमेरिकी क्रांति ने समानता और स्वतंत्रता के अपने विचारों और लोगों के अधिकारों के लिए पूरी दुनिया को प्रेरित किया।
- फ्रांसीसी क्रांति मोनटेस्क्यू और वाल्टेअर जैसे दार्शनिकों के विचारों से प्रेरित थी। इसका स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के विचारों के साथ आधुनिक दुनिया पर एक गहरा प्रभाव पड़ा।
- राष्ट्रवाद की भावना में वृद्धि ने जर्मनी और इटली के एकीकरण के लिए आंदोलनों का नेतृत्व किया।
- नए उद्योग कामकाजी वर्ग की समस्याओं और चिंताओं समाजवाद को जन्म दिया। रूस की क्रांति विकास ऐसी चेतना का एक परिणाम थी और इसी ने दुनिया में पहली समाजवादी में सरकार स्थापना की।

पाठांत प्रश्न

1. शहरों की वृद्धि और व्यापार के उद्‌भव ने सामंती प्रथा का किस प्रकार पतन किया?
2. आप क्यों सोचते हैं कि पुनर्जागरण सोच ने अस्तित्व और विचारों के पुराने तरीकों को प्रभावित किया? लगभग 100 शब्दों में लिखें।
3. धर्म सुधार ने किस प्रकार यूरोप और दुनिया पर प्रभावित किया।
4. नई भूमि की खोजों ने कैसे आधुनिक दुनिया की अर्थव्यवस्था और समाज को बदलता है।
5. अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा में दिए गए मुख्य विचारों को लिखें।
6. फ्रांसीसी क्रांति के किन विचारों ने विश्व पर प्रभाव डाला?
7. जर्मन और इतालीव नेताओं द्वारा इस्तेमाल की गई एकीकरण की रणनीतियों पर चर्चा करें।
8. औद्योगिक श्रमिकों की उस स्थिति का वर्णन करें जिसने क्रांति को प्रभावित किया।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. क) पुनर्जागरण के विद्वान

   ख) सोसाइटी ऑफ जीसस

2. ''सामंतवाद एक प्रणाली है जिसमें लोगों को उनके श्रम के बदले में लार्ड के द्वारा भूमि और संरक्षण दिया जाता था'' इसके दो लक्षण थे।

   क) कामगार अपने लार्ड के लिए कार्य करते और युद्ध लड़ते।

   ख) राजा सबसे शक्तिशाली सामंती प्रमुख था।

3. मानवतावाद बुद्धिवाद, और जांच की भावना।

4. क) मार्टिन लूथर ने यीशु मसीह पर विश्वास के माध्यम से मुक्ति के लिए वकालत की न कि चर्च पर अंधे विश्वास से।

   ख) बाइबिल धार्मिक अधिकार का एकमात्र स्रोत था।

3.2

1. क) (ब)

   ख) (स)

2. क) कारण पर अंधविश्वास के मुकाबले अधिक बल

   ख) वैज्ञानिक जांच, अवलोकन और प्रयोग पर आधारित है।

3. कम्पास, एस्ट्रॉलैब, और नक्शा बनाने की कला।

4. समाज असमान बन गया और इसने लोगों को दो समूहों में विभाजित किया पूंजीवादी या पूंजीपति वर्ग और कार्यकर्ता या सर्वहारा वर्ग।

3.3

1. क) (अ), 13

   ख) आम लोग

   ग) (स) बिस्मार्क

2. गौरवपूर्ण क्रांति दुनिया के लिए प्रेरणा का एक स्रोत थी इसने यह साबित कर दिया क्योंकि संसद जेम्स द्वितीय के निरंकुश शासन को बदलने में सक्षम हुई बिना खून बहाए। इसने सरकार को संवैधानिक, रूप दिया।

3. क) दोनों क्रांतियों ने नागरिकों के अधिकारों पर जोर दिया और शोषण के खिलाफ बात की।

   ख) दोनों ने दुनिया भर में राष्ट्रवाद की भावना को लोकप्रिय बनाया।

4. समानता, स्वतंत्रता, भाषण और लोकतंत्र के विचार और मार्क्स के लेखन के साथ साथ फ्रांसीसी क्रांति और पुनर्जागरण ने समाजवाद के विचार को मजबूत बनाने में मदद की। इसने एक समान समाज को जन्म देने और राज्य के हाथ में उत्पादन के साधनों के स्वमित्व के नियंत्रण की वकालत की। इसने लोगों को प्रभावित किया ओर विशेष रूप से श्रमिकों को और रूसी क्रांति के लिए मार्ग प्रशस्त किया।